– गेहूं की उन्नत किस्में –

समय	सिंचाई	किस्म (शरबती)	किस्म (मालवी)
अगेती (20 अक्टूबर से 10 नवम्बर)	1-2	अमर, अमृता, हर्षिता, पूसा बहार, जे.डब्लू. 3020. एम.पी. 3288, एम.पी. 3211, पूसा उजाला	HI-8627, HI-8777, HI-8802, HI-8805
समय से (10 से 25 नवम्बर)	3-6	स्वर्णा, नवीन चंदौसी, पूर्णा, GW-273, GW-322, GW-366, MP-1201	मालव शक्ति, पोषण, पूसा मंगल, पूसा अनमोल, एम.पीओ. 1215, पूजा तेजस
पछेती (दिसम्बर – जनवरी)	4-5	नवीन चंदौसी, राज 4238, विदिशा, पूसा 111, एम.पी. 3336, RVW-4106, JW-1202, JW-1203	-

– चने की उन्नत किस्में –

चने की निम्नलिखित किस्में उकटारोधी व अधिक उत्पादन देने वाली है –

देशी RVG201, RVG203, RVG 205, फूले विक्रम, फूले विक्रान्त, जे.जी. 6, जे.जी. 11, जे.जी. 12, जे.जी 16, जे. जी 63, विलम्ब से बुवाई हेतु – जे.जी. 14, RVG202

काबुली RVKG101, RVKG201, जे.जी.के. 1, जे.जी.के. 2, जे.जी.के. 3, जे.जी.के. 4, पी.के.वी. 4, कृपा, शुभ्रा, उज्जवल, हिमाली

बीजोपचार –

5–10 ग्राम ट्राइकोडर्मा अथवा 3 ग्राम थाइरम या कार्बेन्डाजिम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें। साथ ही जैव उर्वरकों राइजोबियम एवं पीएसबी से 5–10 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें।

– रेज्ड बेड पद्धति द्वारा चने की बुवाई –

सामान्यतः कृषक बंधु चने की बुवाई के लिये सामान्य (सिंगल बाक्स) सीड ड्रिल का उपयोग करते है। इसके स्थान पर कृषकों को चने की बुवाई हेतु रेज्ड बेड विधि का उपयोग करना चाहिये। इससे उत्पादन अधिक मिलता है। चूंकि इस विधि में नालीयों के माध्यम से सिंचाई की जाती है अतः सिंचाई हेतु पानी की आवश्यकता भी कम होती है ।

- इस विधि में 15–20 सेमी गहराई एवं 45–60 सेमी चौड़ी नालियां बनाई जाती है।
- एक बार में तीन नालीयां एवं दो बेड बनती है। प्रत्येक बेड में दो कतारों में चने की बुवाई की जाती है।
- रेज्ड बेड प्लान्टर की कार्यक्षमता 0.3 से 0.4 हेक्टेयर/प्रति घंटा होती है।

कृषि विज्ञान केन्द्र में मृदा परीक्षण सुविधा मात्र 50 रु. के शुल्क पर उपलब्ध है।

Book Post

____

____

____

– सम्पर्क –
कृषि विज्ञान केन्द्र, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर (म.प्र.)
कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट, कस्तूरबाग्राम, इन्दौर – 452020
फोन : 0731–2874552 फेक्स : 0731–2874151
website: www.kvkindore.in | Email: kvk_indore@rediffmail.com

किसान काल सेन्टर (टोल फ्री नम्बर) : 1800–180–1551 एवं 1800–233–4433

भाकृअनुप ICAR

कस्तूरबा कृषि समाचार

जैविक कृषि को समर्पित केवीके की गतिविधियों का संक्षिप्त प्रतिवेदन

कृषि विज्ञान केन्द्र
कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट
कस्तूरबाग्राम, इन्दौर

Vol. 13, No.4 www.kvkindore.in October-December 2020

– संरक्षक –
डॉ. कम्णाकर त्रिवेदी
अध्यक्ष, क.गा.रा.स्मा.ट्रस्ट
* * * *
श्रीमती सूरज डामोर
मंत्री, क.गा.रा.स्मा.ट्रस्ट
* * * *
– मागदर्शक –
डॉ. अनुपम मिश्रा
आंचलिक परियोजना निदेशक
भा.कृ.अ.प., झोन–9, जबलपुर
* * * *
डॉ. एस.एन. उपाध्याय
निदेशक, विस्तार सेवायें
रा.वि.सि.कृ.वि.वि, ग्वालियर
~~~~~***~~~~~
– सम्पादक मंडल –
डॉ. आलोक देशवाल
कार्यक्रम समन्वयक
* * * *
डॉ. राधेश्याम टेलर
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(कृषि प्रसार)
* * * *
डॉ. दिलीप कुमार मिश्रा
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(उद्यान विज्ञान)
* * * *
डॉ. श्रीराम दाधीच
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(पशुपालन)
* * * *
श्रीमती अर्चना कुमारी
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(गृहविज्ञान)
* * * *
श्री अरुण शुक्ला
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(सस्य विज्ञान)
* * * *
श्री राकेश जैन
प्रक्षेत्र प्रबंधक
* * * *
श्री नितिन पचलानिया
कार्यक्रम सहायक
* * * *
श्री आदर्श तिवारी
कार्यक्रम सहायक
(कम्प्यूटर)

रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि वि.वि. के प्रशासनिक भवन के शुभांरभ कार्यक्रम का वेबकास्ट

दिनांक 29 अगस्त, 2020 को माननीय प्रधानमंत्रीजी ने झांसी में रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि वि.वि. के प्रशासनिक भवन का शुभारंभ किया था। इस कार्यक्रम का वेबकास्ट द्वारा सीधा प्रसारण केवीके में कृषकों के लिये किया गया। उद्घाटन के बाद, प्रधानमंत्रीजी ने विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ संवाद किया और खाद्य तेल के आयात को कम करने और खाद्य प्रसंस्करण, विशेष रूप से फलों और सब्जियों के प्रसंस्करण को बढ़ाने जैसी कुछ चुनौतियों के समाधान के तरीकों के बारे में उनकी राय मांगी। उन्होने छात्रों को जल के सही उपयोग हेतु सूक्ष्म, ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई के बारे में किसानों में जागरूकता पैदा करने के लिये प्रेरित किया। बातचीत के दौरान, प्रधानमंत्रीजी ने इस क्षेत्र में जल के पुनःचक्रीकरण तथा नवीन और कम लागत वाली प्रौद्योगिकी के माध्यम से जल और वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देने पर जोर दिया। कार्यक्रम में कुल 36 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

पोषण माह के अन्तर्गत बीज वितरण एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 17 सितम्बर, 2020 को पोषण माह के अन्तर्गत सब्जी के बीजों का वितरण इफको के सौजन्य से आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को किया गया। कार्यक्रम में इफको के रीजनल मैनेजर श्री दीपक अभयंकर ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को बीज के पैकेट का वितरण किया। राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. देवेन्द्र प्रताप ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और कृषक महिलाओं को प्रशिक्षण देते हुए सोयाबीन के व्यंजनों को बनाने का तरीका और दैनिक भोजन में उनके महत्व पर जानकारी दी। कार्यक्रम में कुल 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कृषक दिवस–सोयाबीन का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा दिनांक 18 सितम्बर, 2020 को सोयाबीन फसल पर समूह प्रदर्शन के अन्तर्गत कृषक दिवस का आयोजन ग्राम आक्या में किया गया। यह कार्यक्रम कृषि विज्ञान केन्द्र और राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान की प्रभारी निदेशक श्रीमती नीता खांडेकर भी उपस्थित थी। उन्होने कृषकों को सोयाबीन की एक से अधिक किस्मों का बुवाई हेतु उपयोग करने, रेज्ड बेड पद्धति से बुवाई करने एवं लाईन से लाईन की दूरी 18 इंच रखने के लिये प्रेरित किया। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. आलोक देशवाल ने कृषकों को सोयबीन की दैनिक आहार में उपयोगिता के बारें में जागरुक किया। इस कार्यक्रम में कुल 75 कृषकों ने भाग लिया।
~~~~~

– गेहूं में सिंचाई की क्रांतिक अवस्थायें –

बौनी किस्मों में

1	शीर्ष जड़े निकलना शुरु होना	20–21 दिन
2	अधिकतम कल्ले (टिलर्स) निकलना	40–45 दिन
3	गभोट (गांठ) अवस्था	60–65 दिन
4	फूल आने की अवस्था	80–85 दिन
5	दूधिया अवस्था	95–100 दिन
6	दूध पकने या दाना कठोर होने की अवस्था	110–115 दिन

उंची किस्मों में

1	जब अधिकतम शीर्ष जड़े निकल आये	30–35 दिन
2	दूसरी गभोट अवस्था पर,	70–75 दिन
3	तीसरी दूधिया अवस्था पर	110–115 दिन

– कृषकोपयोगी सलाह –

माह – नवम्बर

प्रथम सप्ताह –

1. आलू की फसल में माहूं, व मच्छर का नियंत्रण करें। इसके लिये नीम तेल का 3–5 मिली/लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
2. पोषक बगीचे हेतु क्यारियां बनाये एवं मेथी, पालक, मूली, गाजर, धनिया लगाये।
3. खुरपका मुहपका रोग का टीका अवश्य लगवायें।

द्वितीय सप्ताह –

4. गेहूं की फसल में फव्वारा सिंचाई पद्धति का प्रयोग बालियां बनने की अवस्था तक ही करें। फूल बनते समय फव्वारा पद्धति से सिंचाई न करें।
5. लहसुन में खरपतवारों का नियंत्रण करें।
6. फसलों की निंदाई गुड़ाई के लिये उन्नत कृषि यंत्रों जैसे – हेण्ड हो, व्हील हो आदि का प्रयोग करें।

नवम्बर माह के अन्य कार्य –

7. नींबू एवं मिर्ची का अचार व मुरब्बा आदि बनाकर संरक्षण करें।
8. पशुओं में अंतःकृमियों के संक्रमण के उपचार हेतु कृमिनाशक (अलबेंडाजोल या फेनबेंडाजोल या लीवामीसोल या टेट्रामीसोल) दवा अवश्य देवें।
9. दुधारु पशुओं को संतुलित आहार देवें तथा आहार में विटामिन खनिज मिश्रण देवें।
10. चूजों व मुर्गियों को रानीखेत व गम्बोरो बीमारी से बचाने के लिये टीकाकरण अवश्य करवायें।
11. गाय भैसों में प्रसव के बाद गर्भाशय की सफाई के लिये आयुर्वेदिक औषधी रिपलेन्टा या युटेरोटोन या इन्चेलोन अवश्य देवें।
12. थनैला रोग नियंत्रण हेतु दुहान करने से पूर्व व बाद 1 प्रतिशत पौटेशियम परमैंगनेट (पीपी लोशन) या आयोडोफोर घोल से धोये।

माह – दिसम्बर

प्रथम सप्ताह –

1. गेहूं में उपलब्धता के अनुसार क्रांतिक दशाओं में सिंचाई करें तथा शेष नत्रजन का प्रयोग करें।
2. गेहूं की फसल में नत्रजन का 2/3 भाग का प्रयोग सिंचाई के बाद टाप ड्रेसिंग के रुप में प्रयोग करें।
3. बकरियों में संक्रामक निमोनिया का टीका अवश्य लगवायें।

द्वितीय सप्ताह –

4. चने में फली छेदक कीट के नियंत्रण हेतु समन्वित उपाय अपनाये।
5. चने में फूल आने की स्थिति में सिंचाई न करें। यदि पानी उपलब्ध हो तो फली में दाना भरते समय सिंचाई करें।
6. आलू, लहसुन, बैंगन आदि फसलों में नत्रजन की आधी बची हुई मात्रा का प्रयोग करें।

माह दिसम्बर के अन्य कार्य –

7. लहसुन, आलू, टमाटर एवं अन्य सब्जियों में सिंचाई करें एवं उचित पौध संरक्षण उपाय करें।
8. अनार, अमरुद एवं नीबूवर्गीय पौधों में उम्र के अनुसार खाद एवं उर्वरक दें।
9. टमाटर का संरक्षण करें। सॉस, केचअप आदि बनाये।
10. आलू चिप्स हेतु समय एवं श्रम बचाने वाले उन्नत चिप्समेकर यंत्र का उपयोग करें।
11. वानस्पतिक अवशेषों एवं अन्य कचरे से कम्पोस्ट बनाये।
12. सब्जियों तथा मसालों में सिंचाई हेतु टपक सिंचाई पद्धति का उपयोग करें।
13. पशुओं को सर्दी से बचाने हेतु उचित प्रबंध करें एवं कृमि नाशक दवा सभी पशुओं को अवश्य देवें।

लहुसन में समन्वित पोषण प्रबंधन

लहसुन के लिये लगभग 5 टन वर्मीकम्पोस्ट प्रति हे. अथवा 50 टन अच्छी पकी हुई गोबर की खाद खेत में मिलायें। मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का उपयोग करें। सामान्यतः लहसुन में 100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 100 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से उर्वरकों का प्रयोग करें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस, पोटाश की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय डाले तथा शेष नाइट्रोजन की आधी मात्रा को रोपाई के 30 दिन बाद खेत में डालकर सिंचाई करें। इसके अलावा जैव उर्वरक विशेषकर एजेटोबैक्टर एवं पी.एस.बी. कल्चर का अवश्य उपयोग करें। इसके लिये उपरोक्त जैव उर्वरकों की 1 – 1 लीटर मात्रा को 10 लीटर पानी में घोल बनाकर 100 किग्रा गोबर की खाद या मिट्टी में मिलाकर रात भर रखे व सुबह जल्दी बिजाई से पहले भूमि में छिड़क कर पानी लगा दें।

– *विगत तिमाही में केवीके की गतिविधियां* –

गतिविधि	संख्या	लाभान्वित
कृषकों के खेतों पर प्रदर्शन (फसल) 35 हे.	03	73
कृषकों के खेतों पर प्रदर्शन (इन्टरप्राइज)	05	55
प्रक्षेत्र परीक्षण (फसल)	01	10
प्रक्षेत्र परीक्षण (अन्य)	03	120
कृषकों हेतु प्रशिक्षण	14	256
संवान्तर्गत प्रशिक्षण	04	55
टीवी कार्यक्रम	1	–
रेडियो कार्यक्रम	2	–
मृदा परीक्षण	65	65
फार्म स्कूल	4	156
महिला कृषक बैठक	1	9

गतिविधि	संख्या	लाभान्वित
कृषक दिवस	03	111
निदानात्मक प्रक्षेत्र भ्रमण	9	150
कृषकों के खेतो पर वैज्ञानिकों द्वारा भ्रमण	12	78
कृषकों का केवीके के प्रक्षेत्र पर भ्रमण	15	52
स्वयं सहायता समूह बैठक	3	75
पशु टीकाकरण शिविर	3	36
किसान मोबाइल संदेश	8	37568
अतिथि व्याख्यान	6	180
गाजरघास जागरुकता दिवस	1	14
कृषक इन्टरफेस	1	40
वेबिनार	20	20

– आलू में अगेती एवं पिछेती झुलसा रोग का नियंत्रण –

अगेती झुलसा एवं पत्ती धब्बा रोग –

यह फंफूदजनित रोग उस स्थिति में ज्यादा होती है जब नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश का संतुलित उपयोग नहीं होता है। विशेषकर नाइट्रोजन की कमी से बीमारी का असर ज्यादा होता है तथा उपज में ज्यादा नुकसान देखा गया है। इस बीमारी के नियंत्रण के लिये संतुलित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग करें। फसल पर 1.0 प्रतिशत यूरिया का छिड़काव करें। 40 दिन पर पुनः 8–10 दिन बाद एक छिड़काव करना चाहिये। मेन्कोजेब 75% WP तथा रोडोमिल नामक दवा का अन्तराल में छिड़काव करना चाहिये।

पिछेती झुलसा रोग –

यह फंफूदजनित रोग आलू की फसल में काफी नुकसान पहुंचाता है। यह पौधों का पूरा भाग पत्ती तना एवं कन्द को प्रभावित करता है। इसके नियंत्रण के लिये सबसे अच्छा उपाय प्रतिरोधी किस्म जैसे कुफरी बादशाह, कुफरी ज्योति, कुफरी जवाहर, कुफरी आनंद, कुफरी चिपसोना–1, कुफरी चिपसोना–2 एवं कुफरी चिपसोना–3 को लगाना चाहिये। रोगमुक्त बीज का उपयोग करें। मेन्कोजेब 0.20 प्रतिशत एवं मेटोलेक्सीन व मेन्कोजेब रिडोमिल का 0.25 प्रतिशत का छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर करें। आलू निकालने के पहले पौधों के पत्तियों एवं डंडियों को इक्ट्ठा कर के जला देना चाहिये।

– वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक आयोजित –

दिनांक 27 जुलाई 2020 को केवीके की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक आनलाईन माध्यम से सम्पन्न हुई। इसमें कृषि, उद्यानिकी, कृषि अभियांत्रिकी और पशुपालन क्षेत्र के विभिन्न विभागों एवं अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कृषकों ने भाग लिया। कुल प्रतिभागियों की संख्या 17 थी।